उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

डॉ. समीक्षा व्यास

शोध-सार

आधुनिक हिन्दी उपन्यास-साहित्य को समृद्ध करने में उषा प्रियंवदा का योगदान विशिष्ट है। नारी के अन्तर्मन का स्पर्श कर उसकी मानसिकता एवं कुण्ठा को वाणी प्रदान कर उन्होंने आज के समाज की एक महत्वपूर्ण समस्या को उजागर किया है। नारी जीवन और उनसे सम्बन्धित समस्याएँ उनका प्रमुख विषय रहा है। उनकी रचनाओं का संसार स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों और उनके मानसिक संघर्षों से सम्बन्धित है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी उपन्यास को नई दिशा देने में उषा प्रियंवदा का अनुपम योगदान रहा है। एक महिला लेखिका होने के नाते उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर आज की नारी की सामाजिक नियति और मानसिकता को बड़ी गहराई से नापा और उभारा। नारी-जीवन को प्रधानता देते हुए उन्होंने 'पचपन खम्भे लाल दीवार', 'रूकोगी नहीं राधिका', 'शेषयात्रा', 'अन्तर्वंशी' तथा 'भया कबीरा उदास' जैसे उपन्यासों का सृजन किया है। उनके उपन्यासों की विशेषता यह है कि उन्होंने नारी जीवन की विसिंगतियों को आत्मसात् किया है। उनके उपन्यासों में खूब पढ़ी-लिखी नारी है, नौकरी करने वाली नारी है, मध्यवर्गीय नारी की त्रासदी है तथा पारिवारिक समस्या से चक्कर लगाने वाली नारी भी है। उन्होंने परिवर्तित संदर्भ, नई परिस्थितियों तथा उलझन पूर्ण मन:स्थितियों में पड़ने वाली नारी का वर्णन किया है। साथ ही अपनी रचनाओं में आधुनिक तथा भारतीय संस्कारों के मध्य के सूक्ष्म द्वन्द्व को सफलतापूर्वक चित्रित किया है। वह अस्तित्ववादी जीवन-दर्शन से पूर्ण प्रभावित है। इसलिए उनके पात्रें में अनास्था, भय और संत्रास बना रहता है। उनके उपन्यासों में प्राप्त नारी की दुविधा और उसकी छटपटाहट का ऐसा चित्रांकन अन्यत्र विरल है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

हिन्दी साहित्य में जितने भी नारी चरित्र निर्मित किए गए हैं, उनमें अधिकतर नारी संघर्ष की कहानियां है। नारी की छटपटाहट उनकी रचनाओं में दिखाई देती है। नारी पात्र चाहे शरतचन्द्र की हो या मुंशी प्रेमचन्द की हो, सब पीड़ा और त्याग को लेकर चलती है। निसंदेह साहित्यकारों ने भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नारी पात्रों के माध्यम से वैसे ही नारी मुक्ति की बात कही है, जैसी समाज सुधारकों ने कही है।

श्री नेहरू ष्टारदा पीठ द्धपी.जी.ऋ महाविद्यालय,, बीकानेर,।व्याख्याता द्धहिन्दी साहित्यऋ